श्री गोम्मटेस-स्तुति

(पद्यानुवाद-आचार्य विमर्शसागर)

नीलकमल दल सम अति सुन्दर सुखकर मनहर युगल-नयन।
विकसित पूर्ण शशांक बिम्ब सम जो अतिशय कमनीय वदन।।
नम्र नासिका अहा! जीतती चंपक सुमनस छवि अभिराम।
गोम्मटेस तव युगल-चरण में नतमस्तक नित करूँ प्रणाम।।1।।

स्वच्छ विमल उज्ज्वल जल सम छवि वाले गोल-कपोल अहा!
नर्तन करते कर्णपाश जिनके विशाल कन्धों पर आ।।
गज सूण्डा सम बाहुदण्ड द्वय शोभित अति नभ सम शुचि-धाम।
गोम्मटेस तव युगल-चरण में नतमस्तक नित करूँ प्रणाम।।2।।

दिव्य शंख की महासौम्य छवि जीत रही ग्रीवा कमनीय।
निश्चल अचल मेरु सम जिनका मध्यभाग जो अतिरमणीय।।
हिमगिरि सा उन्नत विस्तृत तव बाहुशिरस् अनुपम अभिराम।
गोम्मटेस तव युगल-चरण में नतमस्तक नित करूँ प्रणाम।।3।।

विन्ध्याचल के अग्र-शिखर पर तप से सदा प्रकाशित आप।
सब शुद्धात्म मुमुक्षुजन के शिखामणि हे प्रखर-प्रताप।।
त्रिभुवन को आनंद प्रदाता पूर्ण चाँद सम हे गुणधाम।
गोम्मटेस तव युगल-चरण में नतमस्तक नित करूँ प्रणाम।।4।।

लिपट गईं माधवी लतायें नख-शिख तक तव तन सुविशाल।
भविजन को तिहुँलोकों में सम कल्पवृक्ष हे जिन! तव ख्याल।।

महाऋद्धि युत् देवगणों से अर्चित हैं द्वय-चरण ललाम।
गोम्मटेस तव युगल-चरण में नतमस्तक नित करूँ प्रणाम।।5।।

अहा! दिगम्बर रूप आपका मनभावन भय से निष्क्रान्त।
अम्बरादि में अनासक्त मन, हे विशुद्ध! निश्चय से शान्त।।
महाभयंकर विषधर से पर्शित फिर भी निष्कम्प महान्।
गोम्मटेस तव युगल-चरण में नतमस्तक नित करूँ प्रणाम।।6।।

आशा की अभिलाषा शोषित पोषित समदृष्टि सुवितान।
सर्वदोष के मूल मोह का नाश किया पाया निज ध्यान।।
हे निष्कांक्ष! विरागभाव युत भरत भ्रात में शल्य विराम।
गोम्मटेस तव युगल-चरण में नतमस्तक नित करूँ प्रणाम।।7।।

जो उपाधि से पूर्ण रहित धन-कंचन सकल-संग से दूर।
जो समत्व से अहा! अलंकृत मोह-महामद जेता शूर।।
एक वर्ष तक निराहार उपवास-योग धारा अविराम।
गोम्मटेस तव युगल-चरण में नतमस्तक नित करूँ प्रणाम।।8।।

गोम्मटेस अष्टक अहा! संस्तुतिमय गुणगान।
'नेमिचंद्र आचार्य' ने प्राकृत किया बखान।।1।।

गोम्मटेस थुदि का किया आठ पद्य अनुवाद।
गोम्मटेस की भक्ति से उमड़ा जब आल्हाद।।2।।

गोम्मटेस अष्टक अहा! देता नित आनन्द।
एक यही शुभ भावना, मेंट सकूँ भव फन्द।।3।।

गोम्मटेस तव चरण में नित नुति करूँ प्रणाम।
है ''विमर्श'' अंतिम यही प्राप्त करूँ शिवधाम।।4।।

(इति श्री गोम्मटेस स्तुति)